शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL
वर्ष:4, अंक:11, जनवरी मार्च 2017

विद्यार्थी मंच

मूल्य : 50 रुपये

उस पार से...

मुक्तिबोध

(१३ नवंबर १९१७ - ११ सितम्बर १९६४)

कलात्मक चिंतन के बिना समीक्षा-कार्य नहीं चल सकता। उसी प्रकार वास्तविक जीवन-ज्ञान और जीवन-चिंतन के बिना, उसका मानव-विवेक और कलात्मक विवेक (ये दोनों, एक तरह से पृथक् और दूसरी तरह से अभिन्न हैं) विकसित नहीं हो सकता। यह सही है कि प्रत्येक समीक्षक के अपने-अपने आग्रह होंगे, अपने अपने अनुरोध होंगे। किंतु इन आग्रहों और अनुरोधों को सार्थकता तभी प्राप्त होगी जब वह आग्रह वास्तविक कलात्मक मूल्यों और जीवन-मूल्यों पर- एक साथ दोनों पर-आधारित होगा। इन आग्रहों और अनुरोधों में सार्थकता तभी आयेगी जब समीक्षक स्वयं भीगा हुआ हो, वृथा-भावुक या वृथा-बौद्धिक न हो। भीगकर कही हुई जीवन-विवेकपूर्ण जरा-सी बात का मूल्य सैद्धांतिक आवेश के प्रवाह में कहीं अधिक होता है। समीक्षक यदि स्वयं भीगा हुआ है, मानव-हृदय और मानव-प्रकृति में यदि वह मर्म-दृष्टि रखता है, अनुभव-संपन्न भाव-गंभीर विश्लेषण कर सकता है, ज्ञानात्मक संवेदनों से और संवेदनात्मक ज्ञान से परिपूर्ण है, तभी वह घनिष्ठ और आत्मीय बनकर उपस्थित हो सकता है- पाठक और लेखक दोनों का आत्मीय। यदि साहित्य-सृजन एक संघर्ष है- अभिव्यक्ति के मार्ग का संघर्ष- तो समीक्षा एक प्रेम-दर्शन है। ऐसा प्रेम-दर्शन जो आवश्यकता पड़ने पर अतिशय कठोर होता, किंतु सामान्यतः उदार और कोमल रहता है। ऐसी समीक्षा का विकास यदि समीक्षक करे, तो यह निश्चित है कि वह 'नेतृत्व' कर सकता है।

समीक्षा की समस्याएँ

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

त्रैमासिक

वर्ष–4, अंक- 11, जनवरी–मार्च 2017

संपादक : **डॉ. मीरा सिन्हा**

सह–संपादक : **डॉ. अर्चना पाण्डेय**

प्रकाशक : **आनंद कुमार सिन्हा**

प्रबंध संपादक : **आनंद प्रसाद नोनिया**

कला संपादक : **शुभागता श्रीवास्तव**

आकल्पक : **सोनू प्रजापति**

समस्त पद अवैतनिक

व्यवस्थापन :
प्रियंका सिंह, जीवन सिंह, परमजीत कुमार पंडित

विशेष सहयोग :
डॉ. मनीषा झा : उत्तर बंग विश्वविद्यालय, दार्जिलिंग
डॉ. इतु सिंह : खिदिरपुर कॉलेज, कोलकाता
सुलेखा कुमारी : विद्यासागर कॉलेज, कोलकाता
डॉ. पुनीत कुमार राय: शा. महाविद्यालय, शंकरगढ़, छत्तीसगढ़
राजीव रंजन : अरुणाचल विश्वविद्यालय, अरुणाचल

मुक्तांचल A/c- 50200014076551
HDFC BANK, BURRABAZAR,
KOLKATA- 700007
IFSC CODE- HDFC0000219

पत्रिका में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं
'मुक्तांचल' से संबंधित सारे विवादों के लिए न्याय–क्षेत्र कलकत्ता उच्च न्यायालय होगा।

संपादकीय कार्यालय :

आधुनिक अपार्टमेंट, 6/2/1 आशुतोष मुखर्जी लेन
सलकिया, हावड़ा–711 106, पश्चिम बंगाल
संपर्क – 0332675 7195/1686
ई–मेल – muktanchalquaterly2014@gmail.com

संपर्क :

संपादक : 09831497320,
Email : sinhameera48@gmail.com
सह– संपादक : 098308 39032
Email : pandeyarchanaphd@gmail.com
प्रबंध संपादक : 09748322234
Email : anand87prasad@gmail.com

मुद्रक : शिक्षण, 50, सीताराम घोष स्ट्रीट,
कोलकाता–700 009

आलोचना केंद्रित–अंक

मूल्य
एक अंक– ₹ 50/-
सदस्यता शुल्क
वार्षिक– ₹ 200/–, आजीवन– ₹ 2000/–
संस्थाओं के लिए
वार्षिक– ₹ 250/–, आजीवन– ₹ 2500/–
डाकखर्च (प्रत्येक अंक के लिए) अतिरिक्त ₹ 30 देय होगा।

'केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से सहयोग प्राप्त'

अवस्थिति

शो ध स मी क्ष ण सृ ज न सं चा र

संस्तुति

आलेख

08 डॉ. सरजू प्रसाद मिश्र : हिंदी आलोचना: दशा और दिशा

12 डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित : कविता की परख की व्यावहारिक कसौटी

24 राकेश भारतीय : साहित्यिक आलोचना से अपेक्षाएँ

27 डॉ. शशिभूषण द्विवेदी : उनके बहाने वर्जित–फल के फलांश का समय–आख्यान और 'वे'

अनुशीलन

34 डॉ. व्यास मणि त्रिपाठी: आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की आलोचना–दृष्टि

40 डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ : नयी शती का कथालोचन: पुनर्मूल्यांकन की दिशाएँ

विमर्श

46 डॉ. पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु' : आचार्य रामचंद्र शुक्ल का 'भाव'–विवेचन और 'उत्साह'– निरूपण: मनोवैज्ञानिक और चिंतनात्मक समीचीनता–असमीचीनता का प्रश्न!

गवेषणा

58 मीना कुमारी : मैथिली और हिंदी: नागार्जुन और डॉ. रामविलास की द्वंद्व–दृष्टि

प्रतिलेखन/प्रतिलेख

63 कुशेश्वर : कविता गुमराह है

66 कलाधर : 'मुक्तांचल' का कविता–केंद्रित अंक

कविता

68 शैलेंद्र शांत : खतरे बहुत हैं, ओ नन्हीं चिड़िया..., हालांकि, कि हंसी छूट गई!, दोस्त–दुश्मन, आना, हुआ तमाशा दिल्ली में!, वहीं है न!, कि मंजर बदलेगा, मन की बात, संक्षिप्त संवाद

70 डॉ. ओमप्रकाश सिंह: अविश्वास की भीड़ बहुत है, तंग जड़ों में अंकुर होंगे, कजरौटों के दिन

शोध	**71 शोभा सिंह :**	रियो दे प्लाता, विदेश में होली, खतरनाक समय, जंगल की आग
	74 उमा झुनझुनवाला :	मिलन, बदलाव, मई के लंबे दिनों में, हिज्जे
समीक्षण	सरगम के सुर साधे	
	~~**76 सजेश जोशी :**~~	परिन्दे पर कवि को पहचानते हैं, आईना, प्रतीक्षा, बेघरों का गाना, चुप और बातें
	नई पहल नया कदम	
	~~**80 गौरव भारती :**~~	शायद कोई पागल रहा होगा, ग्रहण
	कहानी	
	82 पूनम सिंह :	अस्मिता
	87 विद्या लाल :	अतीत के घेरे
	पिछले पन्ने से	
सृजन	~~**92 रामदरश मिश्र :**~~	एक औरत: एक जिंदगी
	साक्षात्कार	
	~~**98 लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता :**~~	गंगा प्रसाद विमल से बातचीत
	पुस्तकायन	
	~~**111 केवल गोस्वामी:**~~	कविता और पाठक के रिश्ते
	113 अरुण अभिषेक :	अंतस् ऊर्जा से उष्मित कविताएँ
	115 डॉ. सुभद्रा राठौर:	आंचलिकता की सोंधी महक
संचार	गतिविधियाँ	
	118 साहित्यिक गतिविधियाँ	
	अभिमत	

संस्तुति

सब कुछ दिखते हुए भी जब हमें कुछ नजर नहीं आता है तो उसे अतिक्रम नहीं दृष्टिभ्रम कहते हैं। पता नहीं इसका गर्द और गुब्बार क्यों है ? क्यों धुंधली पड़ रही है दृष्टि ? ? बेधने की जरूरत है–जान बूझकर तैयार किये गये मकड़जाल से निकलकर अलग खड़े होने की जरूरत भी, लेकिन हमारी कमजोरी यह है कि हमें सुरक्षा और संरक्षण दोनों का बेतरह इंतजार होता है। हम रचनाकार झूठी ही सही 'वाह' सुनना चाहते हैं और मिलजुल कर 'ना कह तू मेरी, ना कहूँ मैं तेरी' का माहौल रचते हैं। ऐसे क्रियाकलापों के लिए आभासी दुनिया से लगे रहना बहुत 'सूट' करता है। आत्म–प्रचार का युग है– धड़ल्ले से आत्मकथाएँ लिखी जा रही हैं। जो 'अपना' और निहायत 'निजु' है वह भी अगर नुमाइश पा ले, कोई ऐतराज नहीं। वह सब कुछ हाजिर है जो बेहतर बाजार के लिए लुभावने हों, कथा साहित्य हो या कविता पुस्तक २१वीं सदी में एक संस्कार आवश्यक है 'लोकार्पण' अथवा 'विमोचन'– पिछली सदी में ऐसा कोई चलन नहीं था लेकिन ऐसी पुस्तकें जिनके विचारों की तमीज होती थी खूब चर्चित होती थीं, विवादास्पद पुस्तकों का प्रकाशन आलोचना एवं प्रत्यालोचना के दौर से गुजरता था। समीक्षा की नई–नई कसौटियाँ तैयार हो जाती थीं– टूटती थी फिर बनती थी। साहित्यालोचन का क्रम शास्त्रीयता से शुरू होकर विविध सरणियों से होता हुआ फिर एक नये शास्त्र की तलाश में चलता रहता है। शास्त्रीयता आलोचना की आरंभिक कसौटी है। कुछ 'मान' तैयार किये जाते हैं और तय हो जाते हैं। परंतु समय के अनुरूप उनमें उलटफेर चलते रहते हैं। साहित्य के विविध विधाओं के तौल परख की दृष्टि बदलती है और मान तय होकर टूटते बनते रहते हैं।

भारतीय साहित्य में संस्कृत भाषा के व्याकरणनिष्ठ तत्सम स्वरूप के समानांतर पालि, प्राकृत, अपभ्रंश की लोकवादी साहित्यिक धारा फलवती और बलवती हुई, कालांतर में हिंदी भाषा सागर में शास्त्रीय और लोकवादी विभिन्न भाषाओं का समावेश होता रहा है और हिंदी नवजागरण युग की पुकार बनकर खड़ी हुई। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'साहित्य समाज का दर्पण है' की अवधारणा के साथ आलोचना की वस्तुवादी दृष्टि को क्रियाशील किया। प्रसाद ने *'स्वयंप्रभा–समुज्ज्वला–स्वतंत्रता'* की पुकार को साहित्य में स्वर दिया। स्वाधीनता संग्राम की पृष्ठभूमि ने भाषा और साहित्य को अद्‌भुत शक्ति दी। आजादी की लगभग आधी सदी में शीत युद्ध एवं मोह भंग के अनंतर की भाषा इतनी भ्रष्ट नहीं हुई थी जितनी आज के धूर्त संसार के युग ने भाषा को भाव–विहीन कर दिया है। भाषा का स्खलन